Dr. DHANVIR PRASAD
ASSISTANT PROFESSOR (G. T)
DEPT.OF.PSYCHOLOGY
C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI
L.N.M.U DARBHANGA

JUNG'S THEORY OF DREAM

कार्ल युंग प्रारम्भ में फ्रायड के अनुयायी एवं सहयोगी थे। किन्तु कुछ दिनों के पश्चात् फ्रायड से सैद्धांतिक मतभेद हो जाने के कारण उन्होंने अपनी स्वतंत्र विचारधारा का प्रतिपादन किया तथा विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की स्थापना की।

फ्रायड के स्वप्न सिद्धांत से युंग सहमत नहीं थे। उन्होंने इस सिद्धांत की आलोचना की और स्वप्न का एक पृथक सिद्धांत प्रस्तुत किया । युंग के 'स्वप्न सिद्धांत ' को स्वत: प्रतीकात्मक सिद्धांत कहते हैं। युंग के अनुसार व्यक्ति की मौलिक इच्छा जीने की इच्छा है। फ्रायड ने काम इच्छा को व्यक्ति की मौलिक इच्छा माना

है ।युंग का विचार है कि व्यक्ति जीने की इच्छा के लिए ही सतत् प्रयत्नशील रहता है। यही जीने की इच्छा विभिन्न प्रवृत्तियों एवं क्रियाओं में परिवर्तित होती रहती है। किन्तु सदैव इन इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती है। वातावरण के किसी अवरोध के कारण जब इच्छा शक्ति अवरुद्ध हो जाती है तो यह आगे की ओर बढने के बदले विपरीत दिशा में इसका प्रतिगमन होने लगता है। इस प्रतिगमन के परिणामस्वरूप इच्छा शक्ति चेतन से अचेतन मन मन में चली जाती है। अचेतन की यही इच्छा प्रतीकों के माध्यम से स्वप्न में प्रगट होती है

इससे स्पष्ट होता है कि स्वप्न केवल काम इच्छा की ही तृप्ति नहीं करता है वल्कि स्वप्न में व्यक्ति की विभिन्न प्रवृत्तियों की भी अभिव्यक्ति होती है ।

युंग ने अपने सिद्धांत में अचेतन के महत्व को स्वीकार किया है। किन्तु फ्रायड के अचेतन की धारणा भिन्न है। फ्रायड ने जहाँ व्यक्तिगत अचेतन के महत्व पर

विशेष बल दिया है वहाँ युंग ने व्यक्तिगत अचेतन के साथ-साथ सामूहिक-अचेतन को अधिक प्रमुख माना है।

युंग के अनुसार अचेतन दो प्रकार का होता है –1 व्यक्तिगत अचेतन , 2- सामूहिक अचेतन

युंग के अनुसार व्यक्तिगत अचेतन प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग ढंग का होता है। परन्तु सामूहिक अचेतन सम्पूर्ण मानव जाति में एक समान होता है। अतः इनके सिद्धांत के अनुसार स्वप्न के लिए दमन अनिवार्य नहीं है। स्वप्न में सामूहिक अचेतन में पूर्वजों के संचित संस्कार की भी अभिव्यक्ति होती है। यहाँ पर स्पष्ट करना अनिवार्य है कि युंग दमित इच्छाओं का विरोध नहीं करते हैं। बल्कि स्वप्न को मात्र दमित अचेतन इच्छा का प्रतिफल नहीं मानते हैं। दमित इच्छायें केवल व्यक्तिगत अचेतन में रहती है। सामूहिक अचेतन तो व्यक्ति में जन्म के साथ पूर्वजों के संस्कार के रूप में उत्पन्न होती है जबकि व्यक्तिगत अचेतन का विकास जन्म के पश्चात् इच्छाओं के दमित होने से होता है। अतः व्यक्तिगत

अचेतन, अचेतन की ऊपरी सतह है और सामूहिक अचेतन इसकी निचली सतह है ।